सामंतवाद का पतन

सामंतवाद का उत्थान देश के अंदर शांति व्यवस्था की स्थापना तथा आक्रमणकारियों से देश की रक्षा के उद्देश्य से संभव हुआ था, लेकिन समाज सामंतों के शोषण का शिकार हो गया। सामंततंत्र ने शीघ्र ही व्यवसायियों, राजाओं, चर्च, कृषक-दासों और यहाँ तक कि कई भूमिपतियों को अपना शत्रु बना लिया। फलतः 13वीं सदी के आते-आते इस प्रथा का पतन प्रारंभ हुआ। वस्तुतः इस प्रथा में ही विनाश के बीज मौजूद थे। जिस आधार पर सामंतवाद का भव्य भवन बना था, वह लड़खड़ाने लगा। इसके निम्नलिखित कारण थे —

(1) पारस्परिक युद्ध — सामंतवादी व्यवस्था के पतन का एक प्रमुख कारण सामंतों का पारस्परिक संघर्ष था। प्रत्येक सामंत की अलग-अलग सेना होती थी जिसका मुख्य उद्देश्य आवश्यकता पड़ने पर देश की सुरक्षा करना था। मध्यकालीन यूरोप में देश का प्रमुख राजा अपनी पृथक सेना नहीं रखता था। युद्ध की स्थिति उत्पन्न होने पर अपने सामंतों को संयुक्त

सेना का वह प्रयोग करता था, किंतु प्रायः वे सामंत संघर्ष करते लगते थे। इससे देश की हानि होती थी और स्वयं की शक्ति में भी कमी आती थी।

किसानों का विद्रोह —

सामंतों के शोषण के विरुद्ध किसानों में असंतोष की भावना बढ़ने लगी। इससे सामंती व्यवस्था को गहरा धक्का लगा। सन् 1348 की 'काली मौत' नामक महामारी से अनेक किसान और मजदूरों की मृत्यु हो गई। अतः स्वाभाविक रूप से मजदूर कम हो गए और उनकी मजदूरी में वृद्धि होती, लेकिन सामंतों ने मजदूरी को सीमित रखने का प्रयास किया, अतः मजदूरों और किसानों ने संयुक्त रूप से विद्रोह किया जिसने सामंतवाद की जड़ों को हिला दिया।

(3) नवीन कुछ शस्त्रों का अविष्कार —

13 वीं शदी के बाद सामरिक कला में परिवर्तन हुआ। अब तक सामंत घोड़े पर सवार होकर भाले और बरछे से युद्ध करते थे लेकिन अब लंबे धनुषों का प्रचलन आरंभ हुआ। फिर बारूद और बंदूक के अविष्कार ने युद्ध के तरीकों में आमूल परिवर्तन लाया। अब सामंतों के दुर्ग दुर्भेद्य न रहे। बंदूकों के साथ पैदल सेना की प्रमुखता हो गई और घुड़सवारों का महत्व जाता रहा।

बारूद और बन्दूक के अविष्कार के फलस्वरूप राजा नियमित रूप से स्थायी सेना रखने लगे। उन्हें सरकारी कोष से वेतन मिलता था और वे राजा के प्रति भक्ति रखते थे। स्थायी सेना रखने के कारण राजा सामन्तों पर निर्भर न रहे और सामन्तों का प्रभाव घटने लगा।

(4) धर्मयुद्धों का प्रभाव – ईसाईयों के पवित्र स्थल जेरुसलम पर मुसलमान तुर्कों ने अधिकार कर लिया था। ईसाई इसे मुक्त कराना चाहते थे। इसके लिए ईसाई शूरवीर 1095 से 1453 ई० तक कई बार जेरुसलम गए। इन युद्धों को क्रूसेड या धार्मिक युद्ध कहा गया है। इन युद्धों में सामंत बड़ी संख्या में मारे गए। इससे पश्चिमी यूरोप में सामंतों की शक्ति दुर्बल हो गई और राजतंत्र को दृढ़ होने तथा सामन्तों का दमन करने का अवसर प्राप्त हुआ।

(5) व्यापारिक उन्नति

धर्मयुद्धों के कारण यूरोप के व्यापार तथा वाणिज्य में अभूतपूर्व उन्नति हुई। यूरोपवासियों को एशिया के विषय में अनेक जानकारी प्राप्त हुई और उन्होंने व्यापारिक संबंध कायम किए। इससे यूरोप में एक नए व्यापारिक वर्ग का उदय हुआ। यद्यपि

यद्यपि यह वर्ग धनी और शक्तिशाली था तथापि इसे प्रशासन में कोई स्थान नहीं था और उन्हें सामंतों से हेय माना जाता था। फलतः ये सामंतों से ईर्ष्या करने लगे और इन्हें दबाने में राजा को सहायता देने लगे।

(6) नगरों का अभ्युदय -

व्यापार तथा वाणिज्य के विकास का एक महत्वपूर्ण परिणाम नगरों का विकास था। नगर व्यापारियों के केन्द्र थे जहाँ व्यापारिक मेले आयोजित किए जाते थे और व्यापारी वस्तुओं का विनिमय करते थे। इन व्यापारियों को सस्ते मजदूरों की आवश्यकता थी अतः ग्रामीण क्षेत्रों से अनेक कृषक तथा कृषि दास जीविका के लिए इन नगरों में आकर बसने लगे। नगर धनी व्यापारी वर्ग की शक्ति का केन्द्र था। इससे व्यापारियों और सामन्तों में संघर्ष आरंभ हो गया जिससे अन्ततः सामंतवाद नष्ट हुआ।

मुद्रा का प्रचलन -

मध्ययुग में वस्तु-विनिमय प्रणाली मुख्य रूप से थी। अब मुद्रा का प्रचलन शुरू हुआ, जिससे आर्थिक व्यवस्था में आमूल परिवर्तन हुआ। जो सामन्त धर्म-युद्धों में जाते उन्हें मुद्रा की आवश्यकता होती थी। यह मुद्रा

उन्हें केवल व्यापारियों से ही प्राप्त हो सकती थी। इसके दो परिणाम हुए - प्रथम, सामन्तों ने अब कृषकों तथा दासों से सेवाओं के बदले में मुद्रा या नकद धन मांगना आरंभ किया जिससे अंततः सामन्तों का महत्व कम हुआ और व्यापारियों के महत्व में वृद्धि हुई। द्वितीय, चतुर व्यापारी सामन्तों को मुद्रा देते थे और उसके बदले में उनसे विशेषाधिकार तथा स्वशासन के अधिकार प्राप्त कर लेते थे। इससे भी सामंतों का महत्व कम होने लगा। अब व्यापारी मासिक वेतन पर अपनी सुरक्षा के लिए सैनिक रखने लगे जो प्रायः सामन्तों के सैनिकों से अधिक थी। अब कृषक दास धन देकर अपनी स्वतंत्रता खरीदने लगे तथा व्यापारियों की सेवा में चले गए। अब सामन्त नई व्यापारी वर्ग का सामना करने में असमर्थ थे।

राष्ट्रीयता भावना का उदय —

राष्ट्रीय भावना के विकास से भी सामन्तवाद का पतन हुआ। व्यापारी अपने-अपने देश में अपना प्रभुत्व बनाए रखना चाहते थे। वे नहीं चाहते थे कि उनके देश में दूसरे देशों के व्यापारी बसें। इससे व्यापारियों में संघर्ष उत्पन्न हो गया। प्रत्येक देश के राजा ने अपने देश के व्यापारियों की रक्षा के

लिए ऐसे नियम बनाए जिससे उनके व्यापार का संरक्षण हो। इस प्रकार राष्ट्रीय भावना का विकास हुआ। अब राष्ट्र को सर्वोपरि माना जाने लगा। व्यापारिक लाभ के लिए राष्ट्रों के मध्य युद्ध भी हुए। इन युद्धों से भी राष्ट्रीय भावना शक्तिशाली बनी। राष्ट्रीयता की भावना में सामंतवाद का कोई स्थान नहीं था। अतः राष्ट्रीयता के उत्थान से सामन्तवाद नष्ट हो गया।

आन्तरिक दुर्बलता - सामन्तवाद के पतन में उसकी आन्तरिक दुर्बलता भी उत्तरदायी थी। सामन्तवाद निरंतर युद्ध प्रणाली पर आधारित था। अनेक सामंत विजय या उत्तराधिकार या विवाह द्वारा भूमि प्राप्त कर लेते थे जिनसे विवाद और संघर्ष बना रहता था। दूसरे, सामन्तवादी व्यवस्था शोषण पर आधारित थी और वह नकरात्मक तथा यथास्थितिवादी थी। धीरे २ सभी अन्य वर्ग राजा, व्यापारी, कृषक, मध्यमवर्ग तथा श्रमिक सभी उसके विरोधी हो गए। नवीन आर्थिक विचारों, सैनिक परिवर्तनों तथा अन्य बौद्धिक विचारों का विकास हुआ। इस विकास से सामन्तवाद प्रगति-विरोधी हो गया था। अतः उसका पतन आवश्यक हो गया था।

उपर्युक्त कारणों से स्पष्ट है कि सामन्तीय व्यवस्था अपने अन्तर्निहित दोषों और नई प्रवृत्तियों के विकसित होने के कारण पतन की ओर उन्मुख हुआ।